एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खरीब फसलों मे सफ़ेद लट का प्रभाव एवं नियंत्रण

(*मधु यादव, विजय लक्ष्मी यादव एवं सोहन लाल काजला)
राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर
*ymadhu147@gmail.com

हल्की बालू मिट्टी वाले क्षेत्रों में उगने वाली खरीफ की फसलों के लिए सफेद लट सबसे बड़ी दुश्मन है। फसलों को इस कीट का प्रौढ़ (भृंग) व लट दोनों ही अवस्थाएं हानि पहुंचाती हैं। सफेद रंग की इस लट का सिर भूरा तथा जबड़े शक्तिशाली होते हैं। यह लट बहुभक्षी है जो किसानों के खेत मे आमतोर पर खरीफ की फसलों जेसे बाजरा, मूंगफली, मूंग, मोठ, सब्जियों आदि के पौधों की जड़ों को काटकर हानि पहुंचाती है। वैसे तो भृंगों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। सभी भृंगों की लटें सफेद होती हैं, किन्तु राजस्थान के हल्के बालू मिट्टी वाले क्षेत्रों में होलोट्राइकिया कन्सेनगिनिया नामक प्रजाति के भृंगों की सफेद लटें अत्यधिक हानि पहुंचाती हैं। प्रारंभिक अवस्था वाली सफेद लटें भूमि के अन्दर रहकर जीवित पौधों की सूक्ष्म जड़ों को खाती हैं। द्वितीय एवं तृतीय अवस्था वाली लटें मुख्य जड़ों को काटती हैं। मूंगफली के पौधों में एक ही मुख्य जड़ होने के कारण इस फसल में अत्यधिक नुकसान होता है। लट द्वारा जड़ को काट देने से पौधे पीले पड़कर सूखने लगते है। सूखे पौधे दिखने से सफेद लट के प्रकोप का आभास होता है। यह लट जमीन के अंदर पाए जाती है जो शाम को जमीन से निकलकर पौधो की पत्तियों और जड़ो को काट कर फसल में नुकसान करते है।और सुबह वापिस जमीन में चले जाते है। फसल में सफेद लट कीट का प्रकोप पौधो के अंकुरण के समय अधिक होता है। बाजरा की फसल में इस कीट से बचाने के लिए बुवाई से पहले खेत की गहरी जुताई करें और कुछ दिन तेज धूप लगने दे जिससे मिट्टी में मौजूद कीट नष्ट हो जाएंगे।

सफेद लट की पहचान व जीवनचक्र

1. किसानों को सफेद लट के जीवनचक्र के बारे में जानकारी होना जरूरी है। सफेद लट के प्रौढ़ का रंग बादामी होता है। मानसून की पहली बारिश या मानसून से पहले की पहली अच्छी बारिश के बाद इस कीट के भृंग शाम को गोधूलि वेला के समय रोजाना जमीन से बाहर निकलते व आसपास के परपोषी वृक्षों जैसे नीम, अमरूद, आम वगैरह पर बैठ जाते हैं।
2. कुछ समय तक प्रजनन की क्रिया करने के बाद वे पत्तों को खाना शुरू कर देते हैं। सुबह जल्दी मादा प्रौढ़ जमीन में पहुंचने के बाद अंडे देने का काम करती है।
3. एक मादा भृंग 25-30 अंडे देती है। अंडों से 7 से 10 दिन के बाद पहली अवस्था की लटें निकल जाती हैं और तकरीबन 10-15 दिन बाद दूसरी अवस्था की लटें बन कर फसलों की जड़ों को तेजी से खाना शुरू कर देती हैं, जिस से पौधा सूख कर मर जाता है।
4. यह कीट 3-4 हफ्ते तक दूसरी अवस्था में रहने के बाद तीसरी अवस्था की अंग्रेजी के 'सी' अक्षर के आकार की मुड़ी हुए अर्द्धचंद्राकार रूप में लट बन जाती है, जो फसलों की जड़ों के फैलाव क्षेत्र तक पहुंच जाती है। इस अवस्था में इस कीट को मारना मुश्किल काम है। यह अवस्था तकरीबन 6 हफ्ते तक रहती है. उस के बाद ये लटें प्यूपों में बदल जाती हैं और तकरीबन 2-3 हफ्ते के बाद प्रौढ़ बन जाती हैं।

सफेद लट की रोकथाम सामूहिक तौर पर करनी चाहिए। एक क्षेत्र के व्यक्ति अपने खेतों के आस-पास वृक्षों पर बैठे प्रौढ़ों को प्रथम बरसात के बाद डंडों से हिलाकर नीचे गिरा लें। उन्हें एकत्र कर मिट्टी के तेल या कीटनाशी मिले पानी में डालकर मार दें। वृक्षों पर कीटनाशी कार्बोरिल 50 डब्ल्यूपी की 3 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर फुट स्प्रेयर पंप की सहायता से छिड़काव करें। लटों की रोकथाम काफी कठिन व खर्चीली होने के कारण यह आवश्यक है कि लटों की अपेक्षा प्रौढ़ों को मारने पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। जून-जुलाई में बुआई के समय मूंगफली के बीजों को क्लोथियानिडिन 50 डब्लू.डी. 2 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. 3 मिलीलीटर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 25 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। दूसरी फसलों में बुआई समय 2 लीटर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. या 300 मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. बीज के धोरों में डाले। खड़ी फसल में भृंगों के अधिक निकलने के 21 दिन बाद जुलाई-अगस्त के दौरान क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 4 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. 300 मिलीलीटर प्रति हैक्टर की मात्रा सिंचाई पानी के साथ भूमि में दें। बारिश के पानी पर निर्भर फसल में कीटनाशक युक्त मिट्टी या बजरी को जड़ों के पास उस समय भुरकें जब वर्षा आने वाली हो। जुलाई के अंत से अगस्त के मध्य तक चरी एवं खाली खेतों को मिट्टी पलटने वाले हल से अच्छी जुताई करें ताकि भूमि से सफेदलट बाहर निकल आए और पक्षी उनको खा लें।भृंग नियंत्रण ही सफेद लट से फसलों की सुरक्षा का सरल, सस्ता, कारगर व दूरगामी प्रभाव वाला उपाय है। बारिश शुरू होने के साथ ही नियंत्रण करने से अंडे देने से पहले ही इनको मारा जा सकता है। मूंगफली में बीजोपचार के बाद बीज को छाया में 2-3 घण्टे तक सुखाएं। सूखने के बाद बुआई करें। उपचारित बीज को अधिक देर न रखें। खड़ी फसल में कीटनाशी मिश्रित बजरी या रेत बिखेरने के साथ तुरन्त ही सिंचाई कर दें। अगेती मूंगफली बुआई के 10-15 दिन बाद बारिश आने पर भृंग अधिक संख्या में रात को पेडों पर आते हो तो खड़ी फसल में पहले बताए अनुसार लट का उपचार करें।

भृंगों का नियंत्रण

मई में भृंगों के भूमि से निकलने से पहले पोषी वृक्षों का चयन आसपास के वृक्षों के समूह में से करें। जैसे नीम, बेर, खेजड़ी, अमरूद, गुलर एवं सेजना आदि। मई में बुवाई से पहले प्रत्येक 15 मीटर के अर्द्धपोषी वृक्षों में से उन वृक्षों का चयन करें, जिन पर कीटनाशक का छिड़काव करना हो और फरोमोन डिसेपेन्सर लगाना हो। पहले बारिश से पहले फरोमोन डिस्पेन्सर को तैयार करें। 10 गुणा 10 सेन्टीमीटर स्पंज को बांधने के लिए 20-30 सेन्टीमीटर लम्बे लोहे के तार के एक सिरे पर लगभग 50-60 ग्राम के कंकड़ को बांधें।मानसून पूर्व या मानसून की पहली बारिश के बाद चिन्हित वृक्षों पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल.1.5 मिलीलीटर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें। कीटनाशक छिड़काव के बाद शाम को भृंगों के निकलने के समय, 3 मिलीलीटर फेरोमोन (मिथोऑक्सी बेन्जीन) स्पंज रूपी डिस्पेन्सर पर डालें और इसे कीटनाशक छिड़के पोषी वृक्षों पर फैंककर लटका दें। 3-4 डिसेपेन्सर प्रति वृक्ष प्रतिदिन लगाएं। जहां छिड़काव की सुविधा न हो वहां पोषी वृक्षों पर आने वाले भृंगों को रात में 9-10 बजे के करीब इकट्ठा करें और उन्हें केरोसीन के पानी में डालकर मार दें।